प्रातः क्लास 7-4-68 ओमशान्ति "वर्सा याद है?"

ओमशान्ति। भगवानुवाचः मीठे2 शालीग्रामों वा रूहानी बच्चों प्रति। यह तो बच्चे ही समझते हैं हम सतयुगी आदी सनातन पवित्र देवी-देवता धर्म के थे। यह याद रखना है। हम थे फिर 84 जन्म लेते2 अभी कलियुगी पतित भ्रष्टाचारी हिन्दु धर्म के बन गये हैं। कैसे बन गये हैं वह बताना चाहिए। भाषण करते हो तो टापिक्स रखते हो ना। यह चित्र तो बाबा ने छपवाई है यह टापिक्स की ही है। आदी सनातन देवी देवता धर्म को तो बहुत ही मानते हैं। परन्तु देवता धर्म के बदलो हिन्दु नाम रख दिया है। अभी तुम तो जानते हो हम आदी सनातन कौन थे फिर पुनर्जन्म लेते2 अभी यह बने हैं। यह भगवान बैठ समझाते हैं। कोई देहधारी मनुष्य नहीं हैं। शिव बाबा को कहा ही जाता है बिदेही। उनको अपनी देह नहीं हैं। और सभी आत्माओं को अपनी2 देह है। एक शिव बाबा को देह नहीं है। तो अपन को ऐसे समझाना कितना मीठा लगता है। हम क्या थे अभी क्या बन रहे हैं। यह ड्रामा कैसा बना हुआ है। यह भी अभी तुम ही समझते हो। यह देवी देवता धर्म ही पवित्र गृहस्थ आश्रम था। अभी आश्रम नहीं कहेंगे। पवित्र गृहस्थ आश्रम नाम निकल गया है। आश्रम में सदैव पवित्र ही रहते हैं। कितना बड़ा शिवालय आश्रम था। वेश्यालय को आश्रम थोड़े ही कहेंगे। यह अक्षर भी अच्छी रीत धारण करनी है। बहुत हैं धारण फिर पाईन्ट भी सुनाते हैं। परन्तु मनुष्य बड़े ही पत्थर बुद्धि है। हम भी पत्थर बुधि थे। अभी बाप आकर समझाकर पारस बुधि बनाते हैं। देवी देवता धर्म के बनाते हैं। तुम जानते हो हम आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। हिन्दु नाम तो अभी रखा है। आदी सनातन हिन्दु धर्म तो है नहीं। बाबा ने बहुत बार कहा है आदी सनातन धर्म वालों को पकड़ो। बोलो इस में लिखो आदी सनातन देवीदेवता धर्मके हो या अपवित्र हिन्दु धर्म के हो। तो उनको 84 जन्मों का मालूम पड़े ना। यह नालेज तो बड़ी ही सहज है। सिर्फ लाखों वर्ष कह देने से मनुष्य मुंझ पड़े हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। सतोप्रधान से तमोप्रधान बनने का ड्रामा में पार्ट है। देवीदेवता धर्म वाले ही 84 जन्म लेते2 छी छी बन गये हैं। भारत क्या बन गया है। पहले भारत कितना ऊंच था। भारत की बहुत महिमा करनी चाहिए। अभी फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान, पुरानी से नई दुनिया जरूर बननी है। आगे चल कर तुम्हारे बात को समझेंगे जरूर। बोलो घोरनींद से जागो। बाप को याद करो और वर्सा लो। तुम बच्चों को तो सारा दिन बड़ी खुशी रहनी चाहिए। सारी दुनिया में सारे भारत में तुम्हारे जैसा पदमा पदमभाग्यशाली स्टुडन्ट कोई नहीं। समझते भी हो जो हम थे वही फिर बनेंगे। छांट कर के फिर वही निकलेंगे। इन में तुम मूंझो मत। प्रदर्शनी में थोड़ा भी सुन कर जाते हैं तो वह भी प्रजा बनती जाती है। क्योंकि अविनाशी ज्ञान का तो विनाश होता नहीं। दिन प्रति दिन तुम्हारी संस्था जोर भरती जावेगी। फिर धीरे2 मच्छड़ों सदृश्य तुम्हारे पास आवेंगे। आस्ते2 धर्म की स्थापना होती जावेगी। कोई बड़ाआदमी बाहर से आता है तो उनको मूंह देखने लिए कितने ढेर के ढेर मनुष्य जाते हैं। यहां तो वह बात नहीं। अभी समझते हैं वह तो जैसे चर्ये, बन्दर, भूलरे, हिरण्यकशियपः बिच्छू-खिण्डण हैं। रामायण में भी एक कथा है, बिलकुल ठीक है। राम की सेना दिखाते हैं ना। भल सिकल मनुष्य की है परन्तु सीरत क्या बतावें। इसलिए बाप कहते हैं हियर नो ईविल, सी नो ईविल। इस दुनिया में यह जो भी दुनिया है यह सभी नही देखने की चीजें हैं। यह कचड़ा तो सभी भस्म हो जाना है। दिल में समझते हैं यह हम क्या देखते हैं। जो भी मनुष्य आद देखते हैं यह सभी क्य है। बाहर वालों की बात की जाती है। तुम तो हो संगम युगी ब्राह्मण। इस संगम युग को और कोई नहीं जानते। तुम्हारे में भी बहुत जिनको याद भी नहीं रहता। यह संगम युग है इतना भी सिर्फ याद करो तो सिध हो कि सतयुग में जाने वाले हो। अभी संगम पर है। जाना है घर। पवित्र भी जरूर बनना है। अन्दर में समझते हैं यह तो जैसे सभी मेहतर है। भार खाते हैं। विकार में जाने वाले बड़े कसाई हैं। बड़े ही प्यार से कटारी चलाते एक दो का खून करते हैं। छुड़ीचलाने में कितनी फरहत आती है। विकारी मनुष्यों को। कटारी लगाने बिगड़ रह नहीं सकते। अभी बाप कहते हैं काम को जीतो। यह आदि मध्य अन्त

दुःख देती है। बाबा बहुत कड़े2 अक्षर देते हैं। देवियों को भी कटारी, इतने भुजाएं क्यों देते हैं, जैसे रावण को भुजाएं दी है वैसे देवियों को भी दी है। तुमको तो इतनी भुजाएं हैं नहीं। परन्तु रावण सम्प्रदाय है ना। इसलिए भुजाएं भी दे दी है। रावण सम्प्रदायवासी ही उनकी पूजा करते हैं। देवियों की पूजा गोया रावण की पूजा। फिर इनसल्ट कितनी करते हैं। देवियों को सजा कर पूजा आद कर फिर कहते है डूब जा। नहीं डूबती तो ऊपर चढ़ कर भी डूबोते हैं। कितनी नानसेन्स बुद्धि आसुरी बुद्धि है। कुछ भी समझ में नहीं आता। और ही लड़ने लग पड़ते हैं। देखा ना हिरण्यकश्यप तुम्हारा मण्डवा उड़ाने लगा। अकासुर, बकासुर यह सभी नाम इस संगम युग के ही है। तुम जानते हो उन्हों का भी पार्ट है ड्रामा में। बिघ्न डालेंगे। बिख के लिए कितना तंग करते हैं। कहते हैं बिख दो नही तो हम नीचे, टपा देते गोली खा लेते हैं। और बाप कहते हैं काम महाशत्रु है उनको जीतना है या उनके लिए अपघात करना है। ऐसे2 कसाईयों से बच कर बच्चियां आती है। कितनी मुश्किलता होती है। कसाई तो मेल है फिर कसाईनियां फिमेल्स भी कोई2 बड़ा तंग करती है। पुतनाएं आद उस समय के हैं। अभी तुम बच्चों को कितनी समझानी मिलती है। कितने ढेर मनुष्य हैं दुनिया में। तुम एकेक को कहां तक बैठ समझावेंगे। एक को समझाते हो दूसरा फिर उनको कहेंगे यह तो इन्हों का जादू है। फिर पढ़ाई छोड़ देते। इसलिए बाप कहते रहते हैं आदी सनातन देवी देवता धर्म वालों को पकड़ना चाहिए। आदी सनातन तो देवी देवता धर्म ही है। तुम समझाते हो इन ल0ना0 ने यह पद कैसे पाया। मनुष्य से देवता कैसे बने। जरूर अन्तिम जन्म होगा। 84 जन्म भोग कर फिर यह बने हैं। जिनको सर्विस का शौक है वह इसी में ही लगे रहते है। और सभी तरफ्से मोह आद अ टूट जाता है। हम इन आंखों से जो कुछ देखते हैं उनको भूल जाना है। जैसे कि देखते ही नहीं। सी नो ईविल। हिअर नो ईविल। तुम भी बन्दर थे ना। जैसे वाम-मार्ग में गिरने वाले देवताओं के चित्र दे दिये हैं। वैसे यह बन्दर मिशल बन हैं तो बन्दरों की का ही चित्र बना दिया है। समझते कुछ भी नहीं। कोई भी नहीं जो सृष्टि के रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त को को जानता हो। इसलिए बाबा को कहां बाहर जाने दिल नहीं होती। बच्चों को आफरीन देता हूं जो समझा कर लायक बनाते हैं। प्राईज़ भी इन्हों को मिलती है तो काम कर के दिखाते हैं। तुम जानते हो बाबा हमको कितनी प्राईज़ देंगे। पहला नम्बर है सूर्यवंशी राजधानी की प्राईज़। सेकण्ड नम्बर है चन्द्रवंशी की प्राईज़। नम्बरवार तो होते हैं ना। बाबा नाम नहीं बतलाते हैं। ऐसी2 उल्टी बातें सुनाते हैं फिर उनको मना करते हैं किसको सुनाना नहीं। बहुत बातें बना कर सुनाते हैं शैतानी की। व्यास के लिए भी कहते हैं नागीता भगवद, रामायण आद क्या रचा है। वन्डर कैसी2 बातें बैठ बनाई है। झूठ तो भिरई झूठ .... ग्लानी के शास्त्र पढ़ते2 तुम नीचे ही गिरते आये हो। बाप समझाते हैं इस भक्ति मार्ग के शास्त्र, दान-पूण्य आद करने से मेरे साथ कोई नहीं मिलता। रसातल ही चले जाते हैं। पढ़ते2 दुर्गति को पा लिया है। कितना धन इकट्ठा करते हैं। शाहुकार बन गये हैं। बाप कहते हैं पापात्माएं बनते जाते हैं। पूण्यात्मा को कोई बन न सके। बाप ही आकर पूण्यात्मा बनाते हैं। एक है हद का दान-पूण्य, दूसरा है बेहद का। भक्ति मार्ग में इन डायरेक्ट ईश्वर अर्थ दान करते हैं परन्तु ईश्वर किसको कहा जाता है यह जानते नहीं। अभी तुम जानते हो। तुम कहते हो शिव बाबा ही हमको क्या2 से क्या बनाते हैं। भगवान तो एक ही है। उनको फिर सर्वव्यापी कह दिया है। तो उनको समझाना चाहिए ना। यह तुम लोगों ने क्या किया है। तुम्हारे पास आते भी हैं, थोड़ा सुन कर बाहर गये और खलास। यहां की यहां रही। सब भूल जाते हैं। तुमको कहते हैं बहुत अच्छा है। हम फिर आवेंगे। परन्तु माया कहती है हम तो तुमको नाक से पकड़ गठर में गिरा देंगे। मोह की रग टूटती ही नहीं है। मोह जीत राजा की कथा कितनी अच्छी है। मोह जीत राजाएं फर्स्ट क्लासयह (ल0ना0) है ना। परन्तु समझते नहीं हैं। जैसे कि जट हैं। बाप कहते हैं माया कैसे मिट्टी में मिला देती है। वन्डर है, रावण राज्य में सीढ़ी उतरते2 एकदम मट्टी में भर जाते हैं। बच्चों का खेल

होता है ना। ऊपर जाकर फिर धूं नीचे आकर गिरते हैं। तुम्हारा भी खेल बहुत सहज है। तो बाप कहते हैं अच्छी रीत समझो और धारण करो। कोई भी छी2 काम न करो। बहुत उल्टी सुल्टी बातें सुनाते हैं। ब्यास ने कितनी झूठी शास्त्र बैठ बनाई हैं। और फिर कहते हैं ब्यास भगवानुवाच। अभी भगवान तो शास्त्र लिखते नहीं। बाप कहते हैं मैं तो पढ़ता भी नहीं हूं। मैं तो बीज रूप सत-चित चैतन्य हूं। ज्ञान का सागर हूं। अभी ज्ञान का सागर ऊपर बैठ जावेगा क्या। जरूर कभी भी आकर ज्ञान दिया होगा ना। ज्ञान क्या चीज़ है यह भी किसको पता नहीं। अभी बाप कहते हैं मैं तुमको पढ़ाने आता हूं। तो रेग्युलर पढ़ना चाहिए ना। एक दिन भी पढ़ाई मिस न करनी चाहिए। कोई न कोई पाईन्ट जरूर अच्छी मिलेगी। मुरली न पढ़ेंगे तो पाईन्ट मिस हो जावेगी। अथाह पाईन्टस हैं। यह भी तुमको समझाना है तुम भारतवासी आदी सनातन देवी देवता धर्म के थे। एक ही धर्म था। अभी तो कितने ढेर धर्म हैं। फिर हिस्ट्री मस्ट रिपीट। यह चढ़ने और उतरने का सीढ़ी है। जैसे जीन को हुकुम दिया सीढ़ी उतरो और चढ़ो। तुम सभी जीन हो। 84 की सीढ़ी उतरते हो और चढ़ते हो। कितने ढेर मनुष्य हैं। हरेक को कितना पार्ट बजाना होता है। बच्चों को तो बड़ा वन्डर लगना चाहिए। तुमको बेहद की नाटक की पूरी पहचान मिली है। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त को तुम जानते हो। कोई भी मनुष्य कुत्ता, बिल्ला जनावर आद नहीं बनते। सतयुग में ऐसी कोई भी कुंवाच (कवचन) नहीं निकलते हैं। यहां तो कितनी गाली देते रहते हैं। यह है विषय बैतरणी नदी। रौरव नर्क। मनुष्य सभी रौरव नर्क में पड़े हैं नम्बरवार। अच्छी बच्ची कोई देखी और यह भगाया। बड़े2 आदमी भी भगवाते रहते हैं। और फिर दोष रख दिया है कृष्ण पर कि इतनी रानियां थी। उनको भगाया यह किया। एकदम पाप उठा कर मूंह में डाले यह क्या तुम कृष्ण के लिए ऐसा कहते हो। परन्तु यहां यथा राजा-रानी तथा प्रजा है। तुम किस पर केस करेंगे। तुमारी विजय होनी ही है पिछाड़ी में। जब समझेंगे आदी सनातन देवी देवता धर्म किसने स्थापन किया। यह ही पहले नम्बर की मुख्य बात है। जो कोई भी नहीं जानते। गीता में नाम बदल दिया है। कोई होशियार वकील निकले जो अच्छी रीत समझेंगे। और केस करे। नामी-ग्रामी चीफ-जस्टीस समझे तब बात है। बाप तो कहते हैं मैं तो हूं ही गरीब निवाज़। यह पिछाड़ी को समझेंगे टुलेट हो जाते हैं। अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। स्वीट घर और स्वीटराजाई बुधि में याद है। बाप कहते हैं अभी शान्तिधाम और सुखधाम जाना है। तुम ने जो पार्ट बजाया अभी बुधि में तो है। और सभी मरे पड़े हैं सिवाय ब्राह्मणों के। ब्राह्मण ही खड़े हो जाएंगे। ब्राह्मण से फिर देवता बनते हैं। यह रूप धर्म स्थापन हो रहा है। और धर्म कैसे स्थापन होती है वह भी बुधि में है। क्राईस्ट एक आया। उस समय क्रिश्चन तो होंगे नहीं। ।ऋ, 20 का गुरु बनना होता है क्या। ऐसे भी नहीं बाईबुल कोई सदगति का पुस्तक है। कुछ भी नहीं। क्राईस्ट की महिमा क्या लिख सकते हैं। सीढ़ी उतरते2 दुर्गति में ही जाते हैं। वह क्या समझावेंगे। समझाने वाला तो एक ही बाप है। ऐसे बाप को भी तुम फिर घड़ी2 भूल जाते हो। बाप कहते हैं मुझे याद करो। धंधा आद भी करो। सिर्फ पवित्र बनो। आदी सनातन देवी-देवता धर्म पवित्र था। अभी फिर पवित्र बनना है। चलते-फिरते मुझे याद करो तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। सिवाय याद की यात्रा तुम ऊंच पद कदाचित पा न सकेंगे। जब सतोप्रधान तक पहूंचेंगे तब ही पाप कटेंगे। यह है योग अग्नि। यह अक्षर भी गीता के हैं। योग2 कह कितना माथा मारते हैं। विलायत से भी फंसा कर उन्हों को ले आते हैं योग सिखलाने लिए। अभी जब तुम्हारी बात समझे। परमात्मा सुप्रीम सोल तो एक ही है। वही आकर नासुप्रीम को सुप्रीम बनाते हैं। बाकी तो सभी हैं हठयोगी। प्राचीन योग है नहीं। सन्यासी कोई शुरु से थोड़े ही आये हैं। राजयोग से तो यह देवता बने। जो लास्ट वही फर्स्ट बनते हैं। हठयोगी तो कब राजयोग सिखला नहीं सकते। एक दिन अखबार वाले भी डालेंगे यह तो बराबर राजयोग है सिवाय एक परमपिता परमात्मा के कोई सिखाये न सके। ऐसी2 बातें बड़े2 अक्षरों में डालनी चाहिए। खर्चा का हर्जा नहीं। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।